उर्वरकों का उपयोग आवश्यक है। मिट्टी की जॉच संम्भव न होने की अवस्था में सिंचित क्षेत्रों में 40–50 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर देना चाहिए, लेकिन वर्षा आधारित फसल में 20–25 किलोग्राम नाइट्रोजन और 15–20 किलोग्राम फॉस्फोरस प्रति हेक्टेयर देना चाहिए।

तिल की खेती में खरपतवार प्रबंधन :

यदि खरपतवार समय पर प्रबंधन नहीं किया गया तो पैदावार में भारी गिरावट आती है। खरपतवार की रोकथाम के लिए बुवाई के 3–4 सप्ताह बाद निराई गुड़ाई कर खरपतवार निकाले। जहॉ पर प्रीएमरजेन्स दवा के रूप में प्रयोग करना चाहते हैं वहॉ पर पेण्डीमेथिलीन 30 प्रतिशत ई0सी0 का 1.0 लीटर का सक्रिय मात्रा 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर फसल बुबाई के तुरंत बाद या 48 घंटे के अंदर करें।

तिल की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग और उसके उपाय :

झुलसा एवं अंगमारी रोग :

इस बीमारी में पत्तियों पर छोटे भूरे रंग के शुष्क धब्बे दिखाई देते है। ये धब्बे बड़े होकर पत्तियों को झुलसा देते है। इसका प्रकोप अधिक होने पर तने पर भी गहरी धारियों के रूप में दिखाई देता है। इस रोग से प्रभावित पौधे की जड़ एवं तना भूरे हो जाते है।

प्रबंधन :

फसल पर रोग के लक्षण दिखाई देते ही मैनकोजेब 1–1.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। 15 दिनों पश्चात् पुनः दोबारा छिड़काव करें।

तिल का जड़ तथा तना गलन :

प्रभावित पौधे को ध्यान से देखने पर तने, पत्तियों शाखाओं और फलियों पर छोटे–छोटे काले दाने दिखाई देते है।

प्रबंधन :

प्रबंधन के लिए बुआई से कार्बेण्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू0पी0, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर बुवाई करें।

तिल की कटाई कब करें :

फसल पकने पर तने और फलियों का रंग पीला पड़ जाता है जो फसल कटाई का उपयुक्त समय है। ,खेत में पकी फसल को ज्यादा समय तक रखने पर फलियॉ फटने लगती है जिससे बीज बिखरने लगते है। अतः उचित समय पर फसल कटाई करें। फसल सूखने पर बीजों को साफ करके धूप में सुखायो/भंडारण से पूर्व बीजों में 8–10 प्रतिशत से कम नमी होनी चाहिए।

उपज :

कृषि की उन्नत तकनीक अपनाकर तिल की फसल से 8–12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक पैदावार प्राप्त की जा सकती हे। वैसे कोई भी फसल हो प्रति हेक्टेयर पैदावार, मिट्टी, जलवायु, मौसम, रोगकीट, देखभाल आदि पर निर्भर करता है।'

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
कृषि विज्ञान केन्द्र, भगवानपुर हाट सिवान
(डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रिय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर)
मार्गदर्शक– डॉ0 मधुसुदन कुण्डु, निदेशक प्रसार शिक्षा

Printed By - ***New Print Zone***, Samastipur # 9771222492

प्र.शि.नि./प्रकाशन/306/2022-23

तिल की खेती

लेखकगण

डॉ. हर्षा बी.आर., डॉ. नंदिशा सी.बी., डॉ. अनुराधा रंजन कुमारी, शिवम् चौबे एवं प्रशांत कुमार

कृषि विज्ञान केन्द्र
भगवानपुर हाट, सिवान
डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर – 848125 (बिहार)

बिहार में तिल की खेती गरमा मौसम में की जाती है।

भूमि का प्रकार :

हल्की रेतीली, दोमट, भूमि तिल की खेती हेतु उपर्युक्त होती है। खेती हेतु भूमि का पी0 एच0 मान 5.5 से 7.5 होना चाहिए। भारी मिट्टी में तिल को जल निकास की विशेष व्यवस्था के साथ उगाया जा सकता है।

अनुशंसित किस्मों का विवरण:

प्रभेद	विमोचन वर्ष	पकने की अवधि (दिनों में)	उपज (क्वि0/हे0)	तेल की मात्रा प्रतिशत	अन्य विशेषताएँ
टी0 के0 जी0 –308	2008	80–85	600–700	48–50	तना एवं जड़ सड़नरोग के लिए सहनशील
जे0 टी0–11 (पी0के0डी 0एस0–11)	2008	82–85	650–700	46–50	गहरे भूरे रंग का दाना होता है (मैक्राफोमिना रोग के लिए सहनशील एवं ग्रीष्मकालीन खेती उपर्युक्त
जे0 टी0–12 (पी0के0डी 0एस0–12)	2008	82–85	650–700	50–53	सफेद रंग का दाना, मैक्रोफोमिना रोग के लिए सहनशील, ग्रीष्मकालीन खेती हेतु उपयुक्त।
जवाहर तिल–306	2004	86–90	700–900	52	पौध गलन सरकोस्पोरा पत्ती धब्बा, भूतिया एवं फाइलोडी के सहनशील
जे0 टी0 एस0–8	2000	86–90	600–700	52	दाने का रंग सफेद, फाइटोपथोरा अंगमारी, अल्हरनेरिया पत्ती धब्बा तथा जीवाणु अंगमारी के प्रति सहनशील
टी0 के0 जी0 –55	1998	76–78	630–650	53	सफेद बीज, फाइटापथेरा, अंगमारी, मैक्राफोमिना तना एवं जड़ सड़न बीमारी के लिए सहनशील।
कृष्णा	–	85–90	600–700	46	काला दाना
कॉके सफेद	–	105–110	500–600	50	सफेद दाना

तिल की खेती प्रायः

हमारे यहॉ जायद मौसम में की जाती है। जिसकी बुवाई 25 फरवरी से 10 मार्च तक कर लेनी चाहिए।

बीज दर : 4–6 किग्रा0/हेक्टेयर।

बुवाई के समय :

तिल की खेती खरीफ मौसम में भी की जाती है। जिसका बुआई जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के मध्य तक करनी चाहिए। बीज को कार्बेण्डाजीम 50 प्रतिशत डब्लू0पी0 से 2 ग्राम प्रति किग्रा0 बीज की दर से उपचारित करके ही लगाना चाहिए। बुआई कतार से कतार 30 से0मी0 तथा पौधा से पौधा की दूरी 10 से0मी0 रखते हुए 3 से0मी0 तक गहराई पर बुआई करें।

उर्वरक प्रबंधन :

व्यवसायिक और बड़े क्षेत्र में तिल की खेती के लिए खाद और उर्वरक का प्रयोग मिट्टी जॉच के आधार पर करें। भूमि कम उपजाऊ हो तो, फसल के अच्छे उत्पादन के लिए बुवाई से पूर्व 250 किलोग्राम जिप्सम का प्रयोग लाभकारी होता है। बुवाई के समय फॉस्फोरस विलेय बैक्टीरिया (पी0एस0बी0) तथा एजोटोबैक्टर 1 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से लाभकारी होता है। तिल बुआई के पूर्व 250 किलोग्राम नीम की खल्ली का प्रयोग लाभदायक होता है। तिल की भरपूर पैदावार के लिए अनुमोदित और संतुलित मात्रा में